मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

क्र.सं.	विषय	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक
1	मिट्टी का महत्व और फसल उत्पादन में इसकी भूमिका	02	01
2	मिट्टी की उर्वरता और मिट्टी की उत्पादकता; पोषक तत्व स्रोत – उर्वरक और खाद; पौधों के आवश्यक पोषक तत्व – कार्य और कमी के लक्षण	02	03
3	रसायनों को उनके गुणों के अनुसार वर्णानुक्रम में निर्दिष्ट स्थान पर रखें	02	02
4	सभी उपकरणों की जांच और कीटाणुरहित करें।	02	03
5	कांच के बर्तन को सुखना एवं कीटाणुरहित करना	01	02
6	हॉट एयर ओवेन में काँच के बर्तन को कीटाणुरहित करना	01	02
7	मिट्टी और पौधों का नमूना लेना	01	07
8	उपयोग के बाद निर्दिष्ट स्थानों पर सभी उपकरणों को रखें।	01	02
9	अंतराष्ट्रीय पिपेट विधि (यांत्रिक विश्लेषण) द्वारा मिट्टी की बनावट का निर्धारण करना	02	04
10	मिट्टी की नमी का प्रतिशत (जल धारण क्षमता) निर्धारित करना	02	03
11	मिट्टी की जलधारण क्षमता को ज्ञात करना	02	03
12	मिट्टी की नमी ज्ञात करना	02	03
13	मिट्टी का पीएच ज्ञान करना	04	04
14	मिट्टी की ईसी ज्ञात करना	02	03
15	मिट्टी का जैविक पदार्थ ज्ञात करना	04	06
16	मिट्टी में नत्रजन को ज्ञात करना	02	03
17	मिट्टी में स्फुर को ज्ञात करना	02	03
18	मिट्टी में पोटाश की मात्रा को ज्ञात करना	04	06
19	मिट्टी में पोटाश की मात्रा को ज्ञात करना	08	04
20	मिट्टी में सल्फर की मात्रा को ज्ञात करना	03	03
21	मिट्टी में जिंक कापर, आयरन मंगनिस की मात्रा को ज्ञात करना	05	07
22	सॉइल मिट्टी जाँच बॉक्स के द्वारा वृहत एवं क्षुछम पोषकतत्वों की जाँच	03	03
23	चूने एवं जिप्शम की मात्रा ज्ञात करना	02	06
24	मृदा उर्वरता को ज्ञात करना	03	03
25	मिट्टी जाँच के आधार पर उर्वरक की मात्रा को निकालना	03	07
26	जैविक खाद की अनुशंसा	03	03
27	चूने एवं जिपसम की मात्रा ज्ञात करना	03	04
28	संतुलित पोषक तत्त्व की अनुशंसा	07	07
29	सॉइल हैल्थ कार्ड को पोर्टल पर अपलोड करना	02	13
	कुल घंटे	**80**	**120**